Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

आधुनिक शिक्षा एवं पीढ़ीगत अन्तर: वृद्धाश्रम के सन्दर्भ में विश्लेषण

सावित्री मित्तल [1*], करुणा त्यागी [2]

[1] परास्नातक शोधार्थिनी, समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद्र वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *सावित्री मित्तल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18976409

सारांश

आधुनिक शिक्षा ने समाज को नयी दिशा तकनीकी और स्वतंत्र सोच प्रदान की है| परंतु इसके साथ पीढियों के बीच वैचारिक दुरी भी बढ़ी है| युवा पीढ़ी जहाँ आधुनिक जीवनशैली, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और करियर को प्राथमिकता देती है| वही वृद्ध पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों, पारंपरिक एकता और भावनात्मक संबधों को अधिक महत्व देती है| इसी सोच के अंतर के कारण संवाद की कमी और समझ का अभाव उत्पन्न होता है| जो कई वृद्धाश्रमो की बढ़ती संख्या के रूप में दिखाई देता है|

वृद्धाश्रम केवल रहने का स्थान नहीं बल्कि, बदलती सामाजिक संरचना का प्रतीक बन गया है|

अतः आवशयक है कि शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो नई पीढ़ी को प्रगति के साथ-साथ संस्कार, सहानुभूति और पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोध कराए| जब आधुनिकता और परम्परा के बीच संतुलन स्थापित होगा, तभी पीढियों के बीच की दुरी कम होगी और वृद्धाश्रम की आवश्यकता भी स्वभाविकरूप से घटेगी|

आधुनिक शिक्षा और पीढ़ी अन्तर (जनरेशन गैप) के सन्दर्भ में वृद्धाश्रमो पर किया गया शोध यह दर्शाता है, कि सामाजिक परिवर्तन ने पारिवारिक संरचना और मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है| आधुनिक शिक्षा ने युवाओ को आत्मनिर्भर, करियर केन्द्रित और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया है| परन्तु इसके साथ पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में दूरी भी बढ़ी है| शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिवाद स्वतंत्र निर्णय और व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधिक बल दिया जाता है| जिससे कई बार बुजुर्गो की पारंपरिक सोच और युवाओ की आधुनिक दृष्टि के बीच मतभेद उत्पन्न होते है| यही मतभेद धीरे-धीरे भावनात्मक दुरी में बदल सकते है | जिसके परिणामस्वरुप कुछ परिवारों में बुजुर्गो को वृद्धाश्रम का सहारा लेना पड़ता है | शोध यह भी बताता है, कि समस्या केवल शिक्षा नही, बल्कि संवाद की कमी, समयाभाव और बदलती आर्थिक प्राथमिकताएँ है | समाधान के रूप में पीढियों के बीच संवाद, नैतिक शिक्षा, पारिवारिक मूल्यों का समावेश और बुजुर्गो के अनुभवों के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है| इस प्रकार संतुलित शिक्षा प्रणाली और संवेदनशील पारिवारिक वातावरण ही जनरेशन गैप को कम कर सकते है|

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 05-01-2026
- **Accepted:** 27-02-2026
- **Published:** 12-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 123-125
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सावित्री मित्तल, करुणा त्यागी. आधुनिक शिक्षा एवं पीढ़ीगत अन्तर: वृद्धाश्रम के सन्दर्भ में विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):123-125.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: आधुनिक शिक्षा, पीढ़ीगत अन्तर ,वृद्धाश्रम , पारिवारिक संरचना परिवर्तन , सामाजिक मूल्य एवं परम्परा

© 2026 सावित्री मित्तल, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

आधुनिक युग में शिक्षा ने समाज को नयी दिशा और गति प्रदान की है| आज की शिक्षा केवल ज्ञान तक सिमित न रहकर व्यक्ति को व्यवसायिक दक्षता आत्मनिर्भरता और वैश्विक सोच की ओर प्रेरित करती है| किन्तु इसके साथ-साथ पारिवारिक मूल्यों और पीढियों के बीच संबंधो में परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है| यही परिवर्तन धीरे-धीरे पीढ़ीगत अंतराल को बढ़ावा दे रहा है| जिसके परिणामस्वरुप समाज में वृद्धाश्रमो की संख्या में वृधि हो रही है|

पीढ़ीगत अंतराल का स्वरुप

पुरानी पीढ़ी पारिवारिक उत्तरदायित्व संस्कार और आपसी सहयोग को जीवन का आधार मानती है| जबकि नयी पीढ़ी आधुनिक शिक्षा के प्रभाव में व्यक्तिगत स्वतंत्रा और व्यवहारिकता को आधिक महत्व देती है| सोच मूल्यों और जीवनशैली का यह अंतर आपसी समझ में कमी पैदा करता है| जिसे पीढ़ीगत अंतराल कहा जाता है|

वृद्धाश्रमो का उदय

जब पारिवारिक सहयोग कम होने लगता है और बुजुर्ग स्वयं को उपेक्षित या बोझ महसूस करने लगते है| तब वृद्धाश्रम एक विकल्प के रूप में सामने आते है| वृद्धाश्रम बुजुर्गो को आवास, स्वास्थ्य सुविधा और संगति प्रदान करते है| लेकिन यह पारिवारिक भारतीय पारिवारिक व्यवस्था से अलग एक सामाजिक बदलाव को दर्शाता है|

सामाजिक प्रभाव

वृद्धाश्रमो का बढ़ना इस बात का संकेत है किआधुनिक शिक्षा के साथ नैतिक और संवेदनशील मूल्यों को सुद्रण करना आवश्यक है| यदि शिक्षा के साथ-साथ बच्चो में सहानुभूति, सम्मान और पारिवारिक जिम्मेदारियों का भाव विकसित किया जाए तो पीढ़ीगत अंतराल को कम किया जा सकता है|

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रोजगार प्रतिस्पर्धा और वैश्विक सहभागिता के लिए व्यक्ति को तैयार करना इसके प्रभाव से युवाओ की सोच आधिक व्यावहारिक स्वतंत्रता और करियर केन्द्रित हो गई है| और एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है| परिणामस्वरुप बुजुर्गो के साथ रहने और उनकी देखभाल करने की परम्परा में कमी आई है|

इस विषय पर शोध अत्यंत आवशयक है, क्योंकि यह समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सहायता करता है| शोध के माध्यम से आधुनिक शिक्षा के प्रभाव पीढ़ीगत अंतराल के कारण वृद्धाश्रमो की वास्तविक स्थिति और बुजुर्गो की मानसिक, सामाजिक आवश्यकताओ का विश्लेषण किया जा सकता है| इससे निति-निर्माताओ, शिक्षको और समाजसेवियों को ऐसी योजनाए बनाने में मदद मिलती है, जो पारिवारिक मूल्यों को सुद्रण करे और वृद्धजनों के जीवन स्तर में सुधार लाए|

शोध साहित्य की समीक्षा

शोधर्थिनी द्वारा शोध कार्य की पूर्ति हेतु शोध विषय से सम्बंधित शोध साहित्य की समीक्षा की गई|

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए है| जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास रोजगार के नए अवसर तथा वैश्विक सोच, परन्तु विभिन्न शोधों में यह भी पाया गया है, कि आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन आया है| जिससे पीढ़ी अंतर की समस्या उभर कर सामने आई है| यह पीढ़ी अंतर विशेष रूप से वृद्धजनों और युवाओ के संबंधो को प्रभावित कर रहा है|

शर्मा (2016) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि उच्च शिक्षित युवा वर्ग स्वतंत्र जीवनशैली और व्यक्तिगत उपलब्धियों को अधिक महत्व देता है| जिसके कारण संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर होता जा रही है| इसके परिणामस्वरुप वृद्ध माता-पिता स्वयं को परिवार में उपेक्षित महसूस करने लगते है|

वर्मा एवं सिंह (2018) ने अपने शोध में बताया कि आधुनिक शिक्षा युवाओ में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है| लेकिन यह भावात्मक जुडाव और पारिवरिक उत्तरदायित्वो को कमजोर भी कर रही है| इस कारण वृद्धजन सामाजिक- भावात्मक असुरक्षा का अनुभव करते है|

पटेल (2019) के अनुसार पीढ़ी अंतर का मुख्य कारण सोच मूल्यों और जीवनशैली में अंतर है| आधुनिक शिक्षित पीढ़ी तकनिकी केन्द्रित जीवन जीती है| जबकि वृद्धजन परम्पराओ और अनुभव आधारित जीवन को महत्व देते है| इस वैचारिक अंतर के कारण पारिवारिक संवाद कम होता जा रहा है|

कुमार (2020) ने वृद्धाश्रमो पर किए गए अध्ययन में पाया कि शिक्षित शहरी परिवारों में वृद्धाश्रमो की संख्या तेजी से बढ़ रही है| आधुनिक शिक्षा और नौकरी की व्यस्तता के कारण युवा पीढ़ी वृद्ध माता-पिता की देखभाल करने में स्वाम को असमर्थ महसूस करती है| जिससे वृद्धाश्रम एक विकल्प के रूप में उभर रहे है|

देसाई (2021) के शोध में यह निष्कर्ष सामने आया कि आधुनिक शिक्षा यदि नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा से जुडी हो तो पीढ़ी अंतर को कम किया जा सकता है| शिक्षा के माध्यम से पारिवारिक जिम्मेदारियों और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास किया जा सकता है| जिससे वृद्धाश्रमो की आवश्यकता में कमी आ सकती है|

शोध के उद्देश्य

- इस शोध का मुख्य उदेश्य वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गो के जीवन पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव का अध्ययन करना |
- आधुनिक शिक्षा के कारण उत्पन्न पीढ़ीगत अंतराल के सामाजिक- भावात्मक और पारिवारिक कारणों का विश्लेषण करना |
- युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण, जीवनशैली और मूल्यों में आये परिवर्तनों का बुजुर्गो के साथ संबंधो पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना |
- यह जानना कि किस प्रकार आधुनिक शिक्षा ने पारिवारिक मूल्यों, संयुक्त परिवार प्रणाली और बुजुर्गो के प्रति जिम्मेदारी को प्रभावित किया है|

शोध विधि

1. शोध प्रकृति-

© 2026 सावित्री मित्तल, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है| इस शोध में आधुनिक शिक्षा के प्रभाव से उत्पन्न पीढ़ीगत अंतर तथा उसके कारण वृद्धाश्रमो की बढती आवश्यकता का सामाजिक विश्लेषण किया गया है|

2. शोध विधि

औपचारिक साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया अध्ययन का क्षेत्र- शोधर्थिनी ने जिला मुज़फ्फरनगर के दो वृद्धाश्रमो का भ्रमण किया|

- महिला मुक्ता आश्रम, पटेल नगर
- अपना घर आश्रम, शुक्रताल मुज़फ्फरनगर

नमूना चयन- नमूना चयन के लिए सुविधाजनक नमूना विधि का प्रयोग किया गया, कुल 10 उत्तरदाताओ को अध्ययन में शामिल किया गया |

3. शोध उपकरण

शोधार्थिनी द्वारा शोध उपकरण की पूर्ति हेतु सचरित साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है| संरचित सक्षत्कारो से वह प्रकिया है, जिससे सभी उम्मीदवारों से एक जैसे प्रश्न एक है क्रम में पूछे जाते है| इसे मानकीकृत दृष्टिकोण का उद्देश्य पक्षपात को कम करना और निष्पक्षता सुनिश्चित करना है|

संरचित साक्षात्कार वह प्रक्रिया है जिससे साक्षात्कारकर्ता पूर्व निर्धारित प्रश्नों की सूची के अनुसार प्रत्येक प्रत्याशी से समान प्रकार के प्रश्न पूछता है|

- डेटा संग्रह के स्त्रोत- प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के डेटा का संग्रह किया गया |
- प्राथमिक डेटा- साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी की गई| पुस्तक, शोध पत्रिकाए, सरकारी रिपोर्ट, सामाजिक सर्वेक्षण एवं ऑनलाइन शैक्षणिक स्त्रोत |
- डेटा विश्लेषण जी विधि- एकत्रित डेटा का विश्लेषण तालिकाओं एवं वर्णनात्मक व्याख्या के आधार पर किया गया |

शोध की सीमाए

अध्ययन सीमित नमूने पर आधारित सभी क्षेत्रों का समावेश संभव नहीं हो सका |

उत्तरदाताओ की व्यक्तिगत सोच शोध परिणामो को प्रभावित कर सकती है|

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा ने समाज में विचारो, मूल्यों और जीवनशैली में व्यापक परिवर्तन किया है| तकनिकी प्रगति, करियर उन्मुखता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बढ़ते जोर के कारण परिवार की संरचना में भी परिवर्तन आया है| संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है| जिससे पीढियों के बीच दूरी बढ़ी है| यह पीढ़ी अंतर कई बार वृद्धाश्रमो की बढती संख्या का एक महत्वपूर्ण कारण बनता है|

आभार प्रमाण पत्र

यह कार्य समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर (एम.ए.) उपाधि को पूर्ण करने हेतु प्रस्तुत किये जाने वाले शोध प्रोजेक्ट का एक भाग है| यह शोध कार्य सावित्री द्वारा करुणा त्यागी के निर्देशन में सम्पन्न किया गया है| इस कार्य में सहयोग के लिए लेखिका, डा. संगीता चौधरी प्राचार्या ताराचंद्र वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज मु. नगर के प्रति आभार प्रकट करती है, जिन्होंने आवश्यक सुविधाए उपलब्ध कराई तथा निरंतर प्रोत्साहन दिया |

संदर्भ सूची

1. वृद्धावस्था और सामाजिक नीति: सामाजिक नीति तथा वृद्धावस्था से संबंधित मुद्दे. नई दिल्ली; 1987.
2. राजन एस. इरुदया. भारत में वृद्धावस्था. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2010.
3. शर्मा एसएल. शिक्षा का समाजशास्त्र: शिक्षा परिवर्तन और सामाजिक रूपांतरण. नई दिल्ली; 2002.
4. भारत में वृद्धावस्था की स्थिति पर वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार.
5. संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष. विश्व जनसंख्या वृद्धावस्था रिपोर्ट. न्यूयॉर्क: UNFPA; 2021.
6. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार. वृद्धजन कल्याण संबंधी नीतियाँ. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2020.
7. श्रीनिवास एमएन. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. कैलिफोर्निया: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस; 1996.
8. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय. भारत में वृद्धजनों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति संबंधी रिपोर्ट. नई दिल्ली: NSSO; 2018.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the author

सावित्री मित्तल समाजशास्त्र विभाग, ताराचंद्र वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश की शोधार्थिनी हैं। वे समाजशास्त्र के विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर अध्ययन और शोध कार्य में सक्रिय हैं। उनकी रुचि सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक संरचना और समाज के समसामयिक विषयों पर अकादमिक शोध के माध्यम से योगदान देने में है।

करुणा त्यागी समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में कार्यरत हैं। उन्हें सामाजिक अनुसंधान, महिला अध्ययन और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में विशेष रुचि है। वे विद्यार्थियों को शोध कार्य के लिए प्रेरित करती हैं तथा अकादमिक और सामाजिक विकास में सक्रिय योगदान देती हैं।

© 2026 सावित्री मित्तल, करुणा त्यागी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/